भूमिका॥

इस पत्रमालिका के बनाने से प्रयोजन यह है, कि लोग लिखने पढ़नेका थोड़ाभी अभ्यास करने पर इसे पढ़ेंगे, तो उन्हें यह बात जान पड़ेगी कि बड़ोंको कैसे चिट्ठीलिखतेहैं,और छोटोंको कैसे,और चिट्ठी केलिखने पढ़ने से एक यह कैसा लाभहै, कि अपना कोई प्यारा परदेशमें हो, और उससे किसी बातका पूछना अवश्य होतो वह बात चिट्ठीके द्वारा सहजमें भुगत सक्ती है। और जो मनुष्य चिट्ठी पढ़,लिख न जानता होगा,-तो उसकी कोईबात ऐसी व्यवस्थामें छिपी न रहेगी,क्योंकि जिससे लिखावेगा,वा पढ़ावेगा,वह जानेगा, और क्या भरोसाहै कि वह अपनेमित्रोंसे कह देय।इसकारण उस से बिन बात दबना पड़ेगा। तिसपरभी यहठीक नहीं, कि कदाचित् वह बैरी हो। इसलिये मनुष्योंको चिट्ठी पत्रीका लिखना, पढ़ना अवश्यहै,जिससे अपनीमनकी बात लिखले,और दूसरेकी लिखीबातको समझ ले॥

व्यवहार में चिट्ठी लिखने की साधारण यह रीतिहै, कि बड़ाछोटेको,और बराबरवाला आपसमें स्वस्तिश्री करके लिखता है, और छोटा बड़े को सिद्धिश्री करके लिखताहै॥

नाम के पहिले, जो श्री लिखी जाती हैं,उनकी यह रीति है, कि गुरु को ६ श्री, स्वामी को ५, शिष्यको २, मित्र को ३, पुत्र और स्त्री को एक एक॥

पत्रमालिका ॥

प्रथम भाग ॥

स्वस्तिश्री फ़तहाबाद शुभस्थाने, सर्वोपमा योग्य चिरंजीव मुकुंदकिशोर योग्य, महमन्तपुर से शुभाकांक्षी हरनारायण की आसीस बंचने! यहां के समाचार भले हैं। तुम्हारे सदा-भलेचाहियें ॥ अपरंच तुम्हारे गये पीछे आजतक कोई चिट्ठी नहीं आई, और लोगों से सुनते हैं,कि तुम्हारी बीस रुपये महीने की चाकरी लग गई है। परंतु तुम्हारी चिट्ठी बिन निश्चय नहीं होता। सो चिट्ठी में सब समाचार लिखना। आगे बोहरा अपने रुपये मांगता है और यह भी कहताहै, जो रुपये न दो,तो आज तक का ब्याजही चुका दो। सो उसके मूल के रु० १३५) हैं। उनका ११ महीने का ब्याज १४॥।–)७ पाईहुए।उनमेंबीसोंधके ॥।) जाते रहेंगे तो १४–)७ पाई ब्याज के देने रहेंगे। जो तुम्हारे पास कुछ रुपयेहों, तो भेज देना। कुछ हमारे पास हैं। मिलाके ब्याज चुकादेंगे, और मूलके रुपये चुकाने की मन में खटक रखना ॥ आगे शुभ मिती चैत्र सुदी २ सम्बत् १९०७ ॥

सिद्धिश्री महमन्तपुर शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य, सकल गुण गौरवयुत चाचाजी श्री ५ हरनारायण जी योग्य,लिखी फ़तहाबादसे आज्ञाकारी मुकुन्दकिशोरकी दंडवत् बंचने!यहां आपकी दया से आनन्द हैं। आगे आपकी चिट्ठी आई। समाचार जाने। आपकी दया से भरतपुरमें सेठ जीवनलालकी कोठीमें मेरी चाकरीबीस

रुपये महीनेकी लगगई हैं। सेठजी ने रुई मोललेने को मुझे कोसी भेजाहै,सो अभी १५दिन रहूंगा,फिर भरत पुर जाऊंगा॥ रुपये २५) माधोके हाथ भेजे हैं,सो आप के पास पहुंचेंगे। उनमें से ब्याज देने पीछे रहें, सो मूल में भरती करना,और बाक़ी रुपयोंकी नईलिखतमें लिख देना॥ आगे शुभ मिती चैत्रसुदी५ सम्वत् १९०७॥

सिद्धिश्रीमत्सकल गौरव गुणनिधान लालाजी श्री५ राधाकृष्णजी योग्य, लिखी आगरेसे आज्ञाकारी सुखानन्दकी अनेकदण्डवत् पहुंचे!यहां के समाचार भले हैं॥ आगे बहुतदिनोंसे पत्र समाचार आये नहीं,सो आपके चरणोंमें चित्त लगरहाहै। अपनी प्रसन्नताके समाचार लिखियेगा,और छोटे भैया रामनाथजी काशीजी जाने का विचार करतेहैं। उनके सालेने बुलायाहै। परंतु आप की आज्ञाबिन अटकरहे हैं।इसलिये पत्रका उत्तर शीघ्र ही भेजियेगा। फिर धूप पड़ने लगेगी तो जाना कठिन पड़ेगा॥ अभी एकगाड़ी जाती है। उसमें आंगा भी सस्ता बनगयाहै॥मिती फागुन सुदी४सम्वत्१९०६॥

स्वस्तिश्रीमत् चिरंजीव सुखानन्द योग्य, माधोपुर से शुभाकांक्षी राधाकृष्ण का आशीर्बाद बंचना! अत्र शं तत्रास्तु! अपरञ्च पत्र तुम्हारा फागुन सुदी ४ का लिखा आया। समाचार जाने। तुमने रामनाथ के लिये लिखा, सो ठीक। जो काशीजी जाना हो, तो वे ढील न करें। धूप के दिनों से पहिलेही पहुंच जायं, और आवने की उतावल न करें। कुवारके महीने में अच्छा संग देखकर आवें, और वहां जितने दिन रहें, उनमें कुछ पढ़ते रहें। सुसरालमें जा,खेलमें न लगजायं।

और जब आवें,तो हमारे लिये दर्भकाआसन और पंच पात्र लेतेआवें। हमारे पास आसननहीं रहा।और उसे रुपये२०)देना। और चाहियें, तो फिर भेज देंगे॥ मैं बैशाखतक आऊंगा॥मिती फागुनसुदी६सम्बत् १९०६॥

स्वस्तिश्री बालापुर शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य चौधरी जी श्री ५ रामसिंह जी योग्य, लिखी रायसने से रूपचन्दकी सलाम बंचने! यहां वहां शुभ होवे! आगे इन दिनों मेंयहां के लोगों से हम से कुछ बिगाड़ हो रहा है। इस लिये यहां का बास छोड़ेंगे। जो आप सहायक हों, तो आपके गांव में आ बैठें। पर हमारा थोड़ी धरती में पूरा न पड़ेगा॥ बीघे ५०८ कच्ची, और बीघे ३०८ पक्की, मिले और ढोर डांगर के चराने की कुछ रोक टोक न हो, लो इसका उत्तर लिखना, और गांव को भेज, और पटवारी आदि की लाग लिख भेजना॥ आगे शुभमिती फागुनसुदी ४ सम्बत् १९०६॥

स्वस्तिश्री रायसना शुभस्थाने सर्वोपमायोग्य भाई रूपचन्दजी योग्य, लिखी बालापुर से चौधरी रामसिंह की सलाम बंचना! आगे चिट्ठी तुम्हारी फागुन सुदी ४ की लिखी आई। समाचार लिखे, सो जाने। तुम यहां आओगे, तो धरती बहुत है। और भेज इस रीति से एक बीघे पर लगतीहै। गेहूं ४) जौ ३॥) चना १॥) और बाजरे जुंवार की गोंड़े की १॥) और हार की ॥) और मसीने की बटाई है। बाढ़ ५) से बंधता है। तुस नाजका १) बीघा लगता है इस पर अधन्नी रुपया पटवारी का, और एक पैसा रुपया पंचायती मंदिरका, और गांव खर्च जैसा बट पर आनपड़े,चौकीदारी, और

सड़ककाभी देनापड़ेगा। जो इतने पर प्रसन्नहो,तो चले आना और चाहो,तो पहले आके घर,औरधरतीकाडौल देख जाओ। फिर अच्छादिन देखके घरकों को लाना॥ आगे शुभ मिती चैत्र बदी ५ सम्बत् १९०६॥

सिद्धिश्री सेवा शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य, राज्यश्री दादाजी श्री ५ मनसारांमजी योग्य, शारोली से दयाराम की सलाम बंचने ! यहां वहां शुभ होवे ! आगे समाचार यह है कि हमारी पट्टीकी मालगुज़ारी सालियाना रु० १५९५=) की है। उसमें से एक २ क़िस्त के रु० ३९१।)॥ होते हैं। सो नवम्बर की क़िस्त तो देदीनी है। और दिसम्बर की क़िस्त पूरी पड़जाय, इतनी जमा नहीं दीखती। और देवीराम काका कहतेहैं, जो मुझे तो मुनाफ़े के अपने बट,के ५०) रुपये देदो, मुझे तुम्हारे टोटे नफ़ेसे कुछकाम नहींहै।सो तुम एकबेर यहां आना। नहीं तो बखेड़ामचेगा, जिसमें सब दुखी होंगे॥ आगे शुभ मिती पौष बदी९ सम्बत् १९०६॥

स्वस्तिश्री शारोली शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य चिरंजीव लाला दयाराम योग्य, लिखी सेवे से मनसाराम की आसीस बंचने ! आगे तुमने देवीरामके लिये लिखा, जो वह मुनाफ़े के ५०) रुपये मांगताहै, और टोटे नफ़े से कुछ काम नहीं रखता तो उस से कहो, इस बात की लिखावट निकाले, और एक अर्ज़ी तहसीलदारी में देदो, कि देवीराम सरकारी क़िस्त देने में झगड़ा करता है, और आगे को अमीन लाकरपट्टी के बट करवा डालो, जिस में कुछ झगड़ा न रहे। और मैं अभी वहां चला आऊंगा, तो यहां की मालगुज़ारी

क़े काम में बखेड़ा पड़जायगा। सो जैसे बने, तैसेदेवी-राम को समझा,कामचलाना। वह न समझे, तोवोहरे से रुपये उधारले क़िस्त पहुंचाना। आगे को सो बट कर वा बखेड़ा निबटा देंगे॥ आगेशुभ मिती पौषबदी १३ सम्बत् १९०६॥

स्वस्तिश्री आगरा शुभस्थाने सर्वोपमायोग्य विद्वज्जनमंडलीमंडन मिश्रजी श्री५ गोविन्दरामजी योग्य, फ़रह से पण्डित हरनारायण की नमस्कार बंचना! अत्र शं तत्रास्तु! अपरंच इनदिनों में सुनाहै, जो सब तहसीलदारियों में सरकारकी ओर से पाठशाला होंगी। सो इस बात का निश्चय करियेगा। वहां सब बात का निश्चय हो सक्ता है। और उन पाठशालाओं में क्या क्या पढ़ाया जायगा, और पढ़ानेवाले का महीना क्या होगा, और पढ़ानेवालोंकी परीक्षा होकर भरती होगी, वा और रीति से वे लोग रक्खे जायंगे, ये सब बातें पूछ, निश्चय कर लिखियेगा॥

किमधिकंविज्ञेषु॥ मिती चैत्र सुदी १ सम्बत् १९०७॥

स्वास्तिश्री फ़रह शुभ स्थाने सर्वोपमा योग्य विद्वद्वर्य्य पण्डितजी श्री ५ हरनारायण जी योग्य आगरे से मिश्र गोविन्दराम की नमस्कार बंचने! अत्र शं तत्रास्तु! अपरं च पत्र आपका चैत्रसुदी १ का लिखा आया। समाचार बांच, मिलनेके समान आनन्दहुआ। और आपने पाठशालाओं के विषय में लिखा, सो निश्चय है। प्रत्येक तहसीलदारी में सरकार की ओर से एक एक पाठशाला होगी, और उसमें पढ़ानेवाले का महीना दसरुपये से ले बीस तकहोगा, और जो

विद्यार्थी प्रसन्नतासे दे, वह उस महीने में नहीं गिना जायगा, और पढ़ानेवाले को हिन्दी भाषा,वा उर्दू में से एकमें पूराअभ्यासचाहिये। और दूसरी बोली में थोड़ा भी अभ्यास होगा, तो और अच्छाहै। और संस्कृत, फ़ारसी आदिका जानना आगे बड़ाफलदायक होगा। अभी तो अक्षरदीपिका और बालबोध और गणित-प्रकाश आदि और जिनका नित काम पड़ता है ऐसे हिसाब लड़कोंको सिखाने अवश्यहैं। इसकारण इन्हींमें परीक्षा होगी। इनबातों से यहां के अच्छे लोग अनुमान करते हैं, जोमूर्खता ने यहांके लोगों की बुद्धि चुरा बहुत दुःखदियाहै, उसकापलटा देनेके लिये श्रीयुत महाराजा धिराज कम्पनी बहादुरने मूर्खताको इसदेशसे निकालना चाहाहै। परंतु लोग केवल राज काही प्रबंध देख, निर्भयहो,बैठ न रहें। वेभी जहांतक बने, अपने बड़ेबैरी मूर्खता को निकालनेके लिये साहस करें। तो राज का प्रबंध शीघ्र फलदायकहोगा। इसलिये पढ़ाने वालेको अनेक युक्ति, विद्याफैलाने की, चाहियें ॥ किमधिकं विज्ञेषु ॥ मिती चैत्रसुदी ४ सम्वत् १९०७॥

चिट्ठी को बन्दकर ऊपर सिरनामा लिखने की यह रीति है। जिसके नाम चिट्ठीभेजनाहै, उसका नाम पहली पंक्ति में, और जिस मुहल्ले में देनाहोय, उसका नाम दूसरी पंक्ति में और जिस शहर में देना होय, उसका नाम तीसरी पंक्ति में लिखना चाहिये। और यदि शहर बड़ा अर्थात् प्रसिद्ध न हो तो पहली पंक्ति में नाम, दूसरी पंक्ति में गांव और तीसरी पंक्ति में परगना; और चौथी पंक्ति में ज़िलअ़ का नाम लिखना

चाहिये । और टिकट दाहनी ओर लगाया जावेगा, और तब महसूल दिया योंलिख देना चाहिये, और यदि टिकट न लगाओ तो महसूल नहीं दिया यों लिख देना ॥

जैसा

॥ ७४ ॥ चिरंजीव मुकुन्दराम योग्य पहुंचे ॥
मुहल्ला मोती कटरा
आगरा

महसूल दिया | टिकट

॥ ७४ ॥ पूज्य श्री चाचाजी श्री ५ हरनारायण
जी योग्य पहुंचे
मुहल्ला छिली ईंट
आगरा

महसूल नहीं दिया

॥ ७४ ॥ पूज्य श्री लालाजी श्री ५ राधाकृष्ण
जी योग्य पहुंचे
मौज़े बदरपुर
परगने महोली
ज़िलअ दिल्ली

महसूल दिया | टिकट

॥ ७४ ॥ चिरंजीव सुखानन्द योग्य पहुंचे ॥
मौज़े नारकी
परगने फ़ीरोज़ाबाद
ज़िलअ आगरा

महसूल नहीं दिया

॥ इति ॥